शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

लोकनायक कबीरकालीन परिस्थितियों का विहंगावलोकन

*मयाराम ओसवाल (अतिथि विद्वान)
**डॉ.. रविंद्र पवार (अतिथि विद्वान)
*शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
महू मध्यप्रदेश, भारत
**शासकीय महाविद्यालय
पानसेमल, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

खड़ी बोली हिंदी में महात्मा कबीर का स्थान अप्रतिम है। उन्होंने जिस देश, काल और परिस्थिति में जन्म लिया था, वह उनके व्यक्तित्व के अनुरूप ही थी। भारत की यह खासियत है कि इसे जब जिन महापुरुषो की आवश्यकता होती है, वह निराशा में डूबे समाज को नयी राह दिखाने के लिए आ जाते हैं। सैकड़ों वर्ष बीत जाने के बाद भी कबीर की वाणी हर युग और काल में मनुष्य को सन्मार्ग पर लाने के लिए प्रेरित कर रही है। प्रस्तुत शोध पत्र में कबीर जिस काल में जन्मे थे, उस युग की परिस्थितियों का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

कहते हैं कर्म श्रेष्ठ हो और भाग्य साथ हो तो साधारण मानव को महान् बनने में देर नहीं लगती और वह साधारण मानव जन-साधारण का हीरो बन जाता है। महात्मा कबीर के साथ भी ऐसा ही हुआ। उन्हें समाज-सेवा का जो अवसर मिला वह भक्तिकाल के किसी अन्य कवि को नहीं। भाग्य से कबीर का जन्म ऐसे समय में हुआ जब देश बहुत ही नाजुक या बहुत खतरनाक दौर से गुजर रहा था। मानव टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर चुका था। तब कबीर ने अपने श्रेष्ठ कर्म से टूटती-बिखरती-बिलखती जनता को धैर्य बंधाया और शांतिपूर्वक जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त किया। सच्चे अर्थों में कबीर एक महापुरूष, लोकनायक और युग-दृष्टा थे, जिन्होंने विविध प्रकार की विषम परिस्थितियों में तत्कालीन समस्याओं का समाधान खोजा। वैसे भी महापुरूष युग विशेष की आवश्यकताओं के अनुसार जन्म लिया करते हैं और सामाजिक व्यवस्था को स्थापित करते हैं, जिससे समाज में मानव मूल्यों का महत्व निर्धारित होता है।

कबीर का व्यक्तित्व सम्पूर्ण रूप में उनके युग की उन परिस्थितियों की उपज है, जिन्होंने तत्कालीन हिन्दू जनता का जीवन दूभर बना दिया था। अपनी-अपनी खिचड़ी पकाने वाले मत-मतान्तरों ने उसे भ्रम के पर्दों से ढँक रखा था। कबीर ने कठिन समय पर लोक मानस का नेतृत्व किया और अपने प्रखर व्यक्तित्व द्वारा बाह्याचार एवं ढकोसलों की व्यर्थता सिद्ध की।

प्रस्तुत शोध पत्र में जिस युग में कबीर जैसे महापुरूष ने जन्म लेकर सम्पूर्ण जनता का महान् उपकार किया, हम उस युग विशेष की

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

विविध परिस्थितियों का विहंगावलोकन किया गया है।

(1) सामाजिक परिस्थितियाँ

कबीर के समय में सामाजिक दशा अच्छी नहीं थी। सच भी है कि युद्ध के पश्चात किसी देश की सामाजिक स्थिति ठीक भी कैसे रह सकती है। विजीत हिन्दू जाति घोर मानसिक हीनता से ग्रस्त थी तथा उस पर घोर निराशा का घटाटोप चढ़ा था। तत्कालीन शासकों के अत्याचारों से लोगों का सामान्य जन-जीवन भी पिसता जा रहा था। हिन्दू एवं मुसलमानों में धार्मिक एवं व्यावहारिक आडम्बर अपनी चरम सीमा पर पहुँच गये थे। दोनों में असत्य एवं मिथ्या का बोलबाला था। इसी के परिणाम स्वरूप देश में सर्वत्र अव्यवस्था एवं विश्रृंखलता फैल रही थी।

हिन्दू समाज की दशा तो अत्यन्त दयनीय थी। शासकों ने अपनी स्वेच्छाचारिता, अत्याचार तथा क्रूरता से सनातन धर्म में विश्वास रखने वाले लोगों पर अपार दुःख के पहाड़ ढहाये। मुस्लिम बादशाहों की अनीति से हिन्दुओं का स्वाभिमान हिल उठा और आत्मप्रतिष्ठा की भावना तो लगभग समाप्त-सी हो गयी थी। आतताईयों द्वारा अपने सामने मूर्तियों को तोड़ा जाते देखकर उनका विश्वास हिल गया। देश में सर्वत्र निराशा के बादल छाए हुए थे।

इन कठिन परिस्थितियों में हिन्दुओं ने वर्णाश्रम-व्यवस्था के बंधनों को कठोर कर हिन्दू धर्म की रक्षा करने का प्रयास किया। इससे एक लाभ यह हुआ कि हिन्दुओं के बचे हुए धर्म की रक्षा हुई, वहीं सबसे बड़ी हानि भी यह हुई कि यह व्यवस्था रक्षा तो अत्यल्प हिन्दुओं की कर पाई, किन्तु समाज को अपने एक विशाल निम्नवर्गीय समाज से पृथक होना पड़ा। निम्नवर्गीय समाज को उच्चवर्गीय समाज द्वारा प्रताड़ना एवं तिरस्कार मिला, जिसके कारण उसे भेद-भाव-रहित इस्लाम धर्म को स्वीकार करना पड़ा। वहाँ न कोई बड़ा, न कोई छोटा, सब समान थे। सबको पर्याप्त स्वतंत्रता थी। अब हिन्दू समाज ने एक ऐसे मत की आवश्यकता अनुभव की, जो जाति-पांति की चहारदीवारी से परे हो, जहां व्यक्ति अपने सुकर्मों के कारण वन्दनीय हो, उच्च जाति में जन्म लेने से नहीं। यह मत कबीर के द्वारा प्रचलित हुआ, **"जाति-पातिँ पूछे नहीं कोय, हरि को भजे सौ हरि को होय।"** जो सर्व-ग्राह्य, सर्व-सुलभ और देश-हितार्थ था। यही कारण है कि कबीर के सभी शिष्य निम्नवर्ग के थे। इस काल में शिक्षा का अभाव था, अतः कला, संस्कृति एवं साहित्य ह्रासोन्मुख हो रहे थे। धर्म के ठेकेदारों ने समाज में अनेक प्रकार के अन्धविश्वास एवं आडम्बर फैला रखे थे। इस युग के महामानव महात्मा कबीर ने सर्वप्रथम अपनी पवित्र वाणी द्वारा विद्रोह का स्वर भरा, जिससे युगीन धर्माडम्बरों पर चोट हुई।

मुसलमानों की दशा हिन्दू-समाज से भी अधिक गिरी हुई थी। विजेता होने के कारण मुसलमान धन-धान्य से सम्पन्न थे, जिसका दुष्प्रभाव यह पड़ा कि वे लोग घोर विलासी एवं आचरण-हीन हो गये। छोटे-छोटे ताल्लुकेदार भी सुरा से मदहोश होकर सुन्दरियों की सेना से घिरे रहते थे। मुसलमान इस समय अपना पुरूषत्व खोकर आचरण-भ्रष्ट हो चुके थे। उनकी वह पौरूषेय शक्ति समाप्त हो चुकी थी, जिसके सहारे उन्होंने भारत जैसे विशाल देश पर सत्ता स्थापित की थी। बड़े-बड़े सामन्त अब प्रसिद्ध योद्धा न होकर खाली पदाधिकारी अमीर-उमराव-भर रह गये थे।

परिणाम स्वरूप मुस्लिम समाज बहुत-सी सुविधाओं के बावजूद भी अवनति के गर्त में बुरी तरह फँसा चक्कर काट रहा था।

हिन्दू एवं मुस्लिम दोनों जातियों में भ्रष्ट राजनीति एवं शासकों की क्रूरता द्वारा विभेदक खाई गहरी होती रही। इस युग में कुछ ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता थी, जो दोनों के मध्य की खाई पाट सके तथा वैमनस्य के विष को नष्ट कर सके। समय की आवश्यकतानुसार एक ऐसा वर्ग आया जो दोनों जातियों को एक सूत्र में बँधा देखना चाहता था। इसमें हिन्दू-मुस्लिम दोनों मतों के सारग्राही महात्मा थे, जो जाति-पांति एवं धर्म की संकुचित परिधि से ऊपर उठे हुए थे। युगीन-परिवेश में प्रमुख बात यह दिखाई पड़ती है कि उच्चवर्ग के लोगों में एक-दूसरे के प्रति असहिष्णुता थी, लेकिन निम्नवर्ग सहिष्णु होकर एक-दूसरे के निकट जाने के लिए लालायित हो रहा था। ऐसे ही अनुकूल समय में रामानन्द, उनके शिष्य कबीर और प्रेमाख्यानक कवि जायसी ने अपनी अमृतमयी वाणी द्वारा दोनों वर्गों में अपने शिष्य बनाए; जिससे दोनों की विभेदक खाई पाटने में सहायता और ऐक्य भावना स्थापित करने की प्रेरणा भी मिली।

(2) राजनीतिक परिस्थितियाँ

जो समय महात्मा कबीर का था वही समय मोहम्मद तुगलक का भी था; जिसमें देश की राजनीतिक और आर्थिक दशा बहुत खराब हो चुकी थी। ''तुगलक के राजधानी बदलने, तांबे के सिक्के चलाने आदि के साथ ही साथ दुर्भिक्ष भी देश में पड़ा और इस प्रकार देश का वातावरण एकदम अशान्ति एवं क्रांति का साम्राज्य बन गया।''1 मोहम्मद तुगलक के बाद देश का शासन फिरोजशाह तुगलक के हाथों में आया और देश की परिस्थिति और भी खराब हो गई, उसकी धर्मान्धता ने देश में त्राहि-त्राहि मचा दी। ब्राह्मणों पर टेक्स लगाया गया और उनसे धर्म को श्रेष्ठ कहने का अधिकार भी छीन लिया गया। इस काल में अनेक हिन्दुओं को तलवार के घाट उतारा गया और कहा जाता है कि कुछ लोगों को जीवित ही जला दिया गया। फिरोजशाह के पश्चात् भी कोई न्यायप्रिय शासक गद्दी पर नहीं बैठा। जो सुलतान सिंहासनारूढ़ हुए वे सभी क्रूर तथा धर्म के पक्षपाती और विलासी थे। इसी अशांति के समय तैमूर ने आक्रमण करके हिन्दुओं पर जो जुल्म ढाया वह इतिहास के पन्नों पर उन घृणित अक्षरों में लिखा हुआ है कि जिन्हें मानवता सम्भवतः कभी भी धोकर साफ नहीं कर सकेगी। यह काल हिन्दू-धर्म और उसके अनुयायियों के लिए वह समय था जबकि उनका मान-सम्मान, मर्यादा, बाल-बच्चे, धन सभी कुछ अत्याचारी शासकों और आक्रमणकारियों की लोलुप दृष्टि का शिकार बना हुआ था। अनाचार, आचरण-भ्रष्टता, अत्याचार, दरिद्रता, अशांति, निराशा और क्लांति का देश के कोने-कोने में बोल-बाला था।

देश की ऐसी दुर्दशा के समय शासन की बागडोर तुगलक वंश के हाथों से छिनकर लोदी वंश के हाथों में आई और एक बार बहलोल लोदी के रूप में देश को आशा की झलक दिखलाई देने लगी, परन्तु देश के दुर्भाग्यवश वह अधिक दिन शासन-सत्ता को न संभाल सका और उसके पश्चात् शासन की बागडोर सिकन्दर लोदी के हाथों में चली गई। सिकन्दर लोदी का समय हिन्दुओं के लिए और भी भयानक आया। इस काल में हिन्दुओं को गाजर-मूली की तरह

काटकर फेंक दिया गया। एक-एक दिन में उसने 1500 हिन्दुओं को मौत के मुंह में पहुंचाकर अपनी इस्लामी लिप्सा को शांत किया। यहाँ तक कि उसने लोगों का यमुना में स्नान करना भी बन्द कर दिया था। मंदिरों को तुड़वाकर उनके स्थानों पर सराय बनवाई गईं और इस प्रकार हिन्दू धर्म पर कुठाराघात हुआ।

इन्हीं महाशय सिकन्दर लोदी ने एक बार लोकनायक कबीर को भी दण्डित करने का प्रयास किया था, परन्तु सौभाग्य से वह बच गए।

इस प्रकार हम देखते हैं कि, कबीरकालीन राजनीतिक परिस्थितियाँ गहन अंधकारपूर्ण थीं और चारों ओर निराशा का साम्राज्य छाया हुआ था।

(3) धार्मिक परिस्थितियाँ

मुस्लिमों के अत्याचारों द्वारा हिन्दुओं की धर्म-व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गयी थी। परिणामस्वरूप उस समाज में नाना प्रकार की धार्मिक साधनाएं प्रचलित हुई। उन समस्त चिन्तन धाराओं एवं साधनाओं को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है - (1) एक वे, जो उच्चवर्ग में मान्य एवं प्रिय थीं और (2) दूसरी वे, जिनमें निम्नवर्ग अभिरूचि लेता था।

इस युग में हिन्दु धर्म के प्रत्येक सम्प्रदाय में बाह्याडम्बरों एवं आचरणों को निष्ठापूर्वक करना पड़ता था। पाखण्ड-प्रिय समाज ने धर्म की व्यापक भावनाओं एवं उसके उदात्त अर्थ को जप, माला, तिलक, गेरूए-वस्त्रों एवं पत्थर-पूजा तक सीमित कर रखा था। सवर्ण हिन्दू असवर्णों पर अत्याचार कर रहे थे और उनकी छाया तक से घृणा करते थे, अतः उनका जीवन भी दूभर हो गया था। इन विकट परिस्थितियों में निम्नवर्ग के हिन्दुओं के सम्मुख एक ही मार्ग था, जिसका अवलम्बन ग्रहण कर वे उचित सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकें, वह था इस्लाम धर्म। यद्यपि उस इस्लाम धर्म के अतिरिक्त भारत में नाथ-पन्थ भी ऐसा ही सम्प्रदाय था, जिसे जाति-पांति का भेद स्वीकार न था, किन्तु पता नहीं, क्यों निम्नवर्ग नाथों की साधना से भड़क-भड़ककर सूफी मत एवं इस्लाम धर्म स्वीकार कर रहा था। इसका प्रमुख कारण यह है कि बौद्ध धर्म जिस वैभव से फूला-फला, वैसे ही लुप्तप्रायः हुआ और उससे उद्भूत नाथ-पंथ, सहजयान सम्प्रदाय आदि अपनी साधना की गुह्यता के कारण काल कवलित हो रहे थे।

इस प्रकार हिन्दू धर्म ने विषम परिस्थितियों में भी अद्भूत धैर्य का परिचय दिया। इस्लाम धर्म का वैभव अधिकांश जनता को आकृष्ट न कर सका। वह सवर्ण हिन्दुओं की यातनाओं से पिसकर भी हिन्दू बनी रही। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता है कि यदि हिन्दू धर्म ने अपने दलित समझे जाने वाले वर्ग को उपेक्षित एवं तिरस्कृत न किया होता और मुसलमानों ने तलवार का सहारा लेकर भीषण रक्तपात इस्लाम धर्म के प्रचार के लिए न मचाया होता, तो शायद ही भारतीय जनता एक-आध प्रतिशत कठिनाई से मुसलमान बन पाती, परन्तु दुर्भाग्य के कारण हिन्दुओं की तो बुद्धि ही मारी गयी थी। उन्होंने जितना अपने को पवित्र रखने का प्रयत्न किया, उतना ही अपना अधिक भाग खोकर हिन्दुओं की संख्या कम की और इस्लामियों की वृद्धि में अनजाने महत्वपूर्ण योग दिया। समय के प्रभाव से इस्लाम धर्म भी अछूता न रह सका। धीरे-धीरे उसमें भी बाह्याचार एवं अन्धविश्वासों का महत्व बढ़ने लगा। कुरान, रोजा, नमाज सम्बन्धी

आचरणों में ही धर्म केन्द्रित हो रहा था तथा इस्लाम के प्रचारक कंचन, कादम्ब एवं कामिनी-विलास में फँसते जा रहे थे।

कबीर उस युग के लोकनायक एवं युग-दृष्टा थे; उन्होंने दोनों धर्मों के आडम्बरों, पाखण्डों एवं अभावों को बड़े निकट से देखा-परखा था। उन्हें अपने जन्म के कारण कुछ ऐसी सुविधाएँ प्राप्त थीं, जो मध्यकाल के किसी अन्य साधक एवं कवि को नहीं थी। उन्होंने खुलकर हिन्दू-मुस्लिम पर तीखे व्यंग्य-प्रहार किये, जिससे दोनों तिलमिला उठे, तब उन्हें प्रेम-भक्ति का मार्ग-निर्देशन किया। "संयोग से वह ऐसे युग-संधि के समय उत्पन्न हुए थे, जिसे हम विविध धर्म-साधनाओं और मनोभावों का चौराहा कह सकते हैं। सौभाग्यवश सुयोग ही ऐसा मिला था। जितने प्रकार के संस्कार वाले रास्ते थे, वे प्रायः उनके लिए बन्द थे। वे मुसलमान होकर असल में मुसलमान नहीं थे। वे हिन्दू होकर भी हिन्दू नहीं थे। "कबीरदास ऐसे मिलन-बिन्दु पर खड़े थे, जहां से एक ओर हिन्दुत्व निकल जाता है और दूसरी ओर मुसलमानत्व। जहां एक ओर ज्ञान निकल जाता है और दूसरी ओर अशिक्षा, जहां एक ओर योग-मार्ग निकल जाता और दूसरी ओर भक्ति-मार्ग, जहां से एक ओर निर्गुण-भावना निकल जाती है तो दूसरी ओर सगुण-साधना। उसी प्रशस्त चौराहे पर वे खड़े थे। वे दोनों ओर देख सकते थे और परस्पर विरूद्ध दिशा में गए मार्गों के गुण-दोष उन्हें दिखाई दे जाते थे।"2

(4) साहित्यिक परिस्थितियाँ

साहित्य के विकास एवं समृद्धि के लिए राष्ट्र की उर्वरा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की आवश्यकता होती है। कबीर का समय भारतीय संस्कृति का ह्रास-काल कहलाता है, अतः ऐसे समय में विशुद्ध साहित्य की चर्चा करना ही व्यर्थ होगा। वैसे भी कबीर का साहित्य से कोई सम्बन्ध नहीं था। उनकी रचनाओं से स्पष्ट जान पड़ता है कि कबीर में न तो अध्ययन की अभिरूचि थी और न अनुशीलन की क्षमता। कबीर के काव्य का प्रयोजन 'विशुद्ध साहित्य' के समान कलात्मक नहीं, अपितु लोक-मंगल की भावना फैलाना था। यद्यपि इस लोक-मंगल की भावना से प्रसूत-साहित्य में काव्य के उच्च से उच्चतम वस्तु-रस का उत्कृष्ट स्वरूप प्राप्त होता है। अपनी रचनाओं में उन्होंने अनेक स्थलों पर उपनिषद्, गीता और भागवत आदि ग्रंथों के नाम दिए हैं। इन ग्रंथों से उन्होंने सुना-सुनाया ज्ञान प्राप्त किया। पंडित लोगों से, जो साहित्य के मर्मज्ञ होते थे, कबीर का विरोध चलता रहता था।

निष्कर्ष

लोकनायक कबीरकालीन परिस्थितियों का विहंगावलोकन करने के पश्चात् निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि, कबीर एक ऐसे समय में उत्पन्न हुए थे, जब देश विषम परिस्थितियों से गुजर रहा था, मस्तमौला सन्त को ये विषम परिस्थितियाँ ही वरदान बनकर अनुकूल हो गईं और उन्हीं के सहारे वह मध्य-युग का प्रर्वतक सन्त एवं महाकवि कहलाया। युगीन परिस्थितियों के अध्ययन एवं मनन के द्वारा कबीर ने जो कुछ कहा, उसमें तत्कालीन समस्त समस्याओं का समाधान खोजा जा सकता है। कबीर ने अपनी वाणी के द्वारा एक अभिनव समाज का निर्माण किया और समाज ने अपने लिए एक कुशल मार्गदर्शक सन्त प्राप्त किया। इस कारण हम कह सकते हैं कि "सामयिक परिस्थितियों ने कबीर

जैसे अदम्य साहसी व्यक्ति को गढ़ा, और विलक्षण व्यक्तित्व वाले कबीर ने नए समाज का निर्माण किया।"3

संदर्भ ग्रंथ

1.भक्ति साहित्य के आधार स्तम्भ: यज्ञदत्त शर्मा, पृ. 21, साहित्य प्रकाशन, मालीवाड़ा, दिल्ली, संस्करण: प्रथम-1984

2.कबीर एक नव्य बोध: बैजनाथ प्रसाद शुक्ल, पृ. 15, प्रकाशक: साहित्य कुटीर, 366, गईन रोड़, अमीनाबाद, लखनऊ, संस्करण: प्रथम- 1975

3.कबीर एक नव्य बोध: बैजनाथ प्रसाद शुक्ल, पृ. 15,

4.हिन्दी के प्रतिनिधि कवि: उमेश शास्त्री, देवनागर प्रकाशन, जयपुर, संस्करण, प्रथम-1980

5.कबीर ग्रंथावली सटीक: प्रो. पुष्पपालसिंह, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-1988

6.साहित्यिक निबंध: राजनाथ शर्मा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, अठारहवां संस्करण-1981

7.कबीर (एक विश्लेषण): सं. रामेश्वर उपाध्याय, प्रकाशक: सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार पटियाला हाऊस, नई दिल्ली, संस्करण: प्रथम-1978